Need to check pollution in the Subarnarekha river

श्री संजय सेठ **(**राँची**):** माननीय सभापति, मेरे लोकसभा क्षेत्र रांची में हटिया विधान सभा में नगड़ी नामक स्थान है, जहां से स्वर्णरेखा पवित्र नदी निकलती है और रांची शहर से गुजरते हुए जमशेदपुर से होते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है। 474 किलोमीटर लंबी यह नदी झारखंड की लाइफलाइन कही जाती है, रांची की लाइफलाइन कही जाती है। झारखंड की प्राचीन संस्कृति में इस नदी का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। रांची में चुटिया नामक स्थान में स्वर्णरेखा एक सहायक नदी हरमू से आकर मिलती है। इस संगम पर करीब 500 वर्ष पुराने नागवंशीकालीन 21 शिवलिंग नदी की चट्टानों में उत्कीर्ण हैं। नागवंशी राजाओं की राजधानी चुटिया होती थी और यह सांस्कृतिक अवशेष एक जीवंत धनाढ्य संस्कृति की कहानी कहता था। अब अफसोस इस बात का है कि झारखंड की जेएमएम और कांग्रेस सरकार की अनदेखी के कारण, उदासीनता के कारण और गैर योजना से तेजी से बढ़ते शहरीकरण के कारण इसकी सहायक नदी हरमू में मिलती है, वह नाले में तब्दील हो चुकी है। नदियों के किनारे अतिक्रमण के कारण शहर के सीवरेज सिस्टम का गंदा पानी स्वर्णरेखा नदी में गिरता है। दिल्ली की यमुना नदी से भी ज्यादा खराब स्थिति स्वर्णरेखा नदी की है। इन दोनों नदियों के संगम तल के स्थल पर स्वर्णरेखा नदी बिल्कुल काली पड़ती जा रही है। आज से लगभग 10-15 साल पहले हजारों की संख्या में छठव्रती अर्ध्य देने जाते थे। ? (व्यवधान) मैं भी वहां सावन के महीने में कांवड़ लेकर स्वर्णरेखा नदी के तट से पानी लेकर पहाड़ी मंदिर पर बाबा का अभिषेक करने जाता था। वहां अनेक तरह के मेले लगते थे और बहुत लोग आते थे।? (व्यवधान)

माननीय सभापति**:** आप क्या चाहते हैं, यह बताएं।

? (व्यवधान)

श्री संजय सेठ **:** हर एक घर से एक-एक मुट्टी चावल और दाल लेकर परसाद बनाया जाता था, लेकिन नदी के प्रदूषित होने के कारण लोगों ने इस नदी से खुद को दूर कर लिया। अब छठ और कार्तिक पूर्णिमा में दोनों श्रद्धालुओं की संख्या कम हो गई है। नदी की चट्टानों में उत्कीर्ण 21 शिवलिंग तेजी से क्षीण हो रहे हैं।

मेरी मांग है कि दीर्घकालीन योजना बनाकर स्वर्णरेखा, जो कि एक पवित्र नदी है, इसे बचाया जाए। हमें वहां की सरकार से कोई उम्मीद नहीं है। यह नदी सांस्कृतिक धरोहर है, इसे कैसे बचाएं, मैं सरकार का ध्यान आपके माध्यम से इस तरफ आकृष्ट करना चाहता हूं।